संत श्री आशारामजी आश्रम द्वारा प्रकाशित

ऋषि प्रसाद

मूल्य : ₹ ७ भाषा : हिन्दी
प्रकाशन दिनांक : १ जुलाई २०२२
वर्ष : ३२ अंक : १ (निरंतर अंक : ३५५)
पृष्ठ संख्या : ३६ (आवरण पृष्ठ सहित)

दिव्य अनुभव विशेषांक

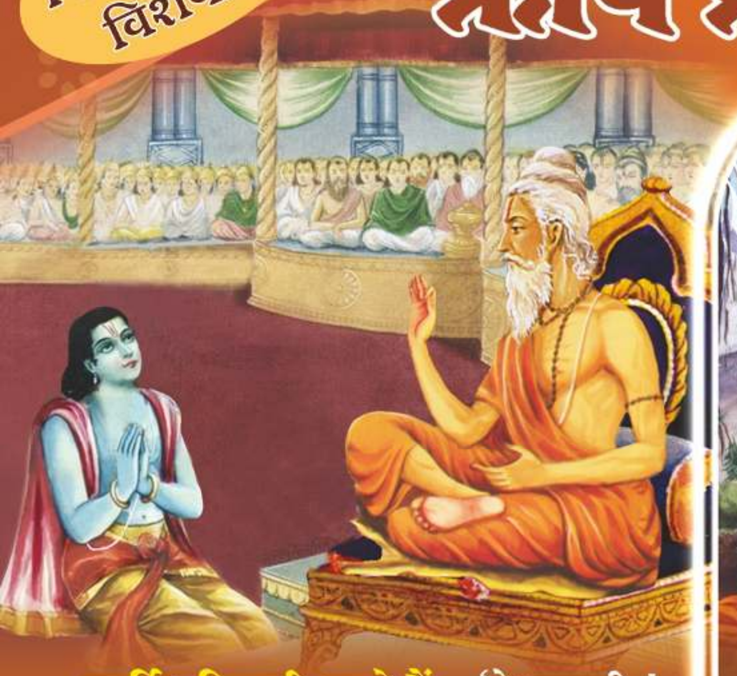

महर्षि वसिष्ठजी कहते हैं : 'हे रामजी ! अज्ञानी जो कुछ मुझको कहते हैं और हँसते हैं, सो मैं सब जानता हूँ। परंतु मेरा जो दया का स्वभाव है इससे मैं चाहता हूँ कि किसी प्रकार वे नरकरूप संसार से निकलें और इसी कारण मैं उपदेश करता हूँ।

हे रामजी ! जो परमहंस संत मिलें और जो साधु हों और जिनमें एक गुण भी शुभ हो उसको भी अंगीकार कीजिये परंतु साधु के दोष न विचारिये, उनके शुभ गुण ही अंगीकार कीजिये।' (श्री योगवासिष्ठ महारामायण, निर्वाण प्रकरण)

आकल्पजन्मकोटीनां यज्ञव्रततपः क्रियाः ।
ताः सर्वाः सफला देवि गुरुसन्तोषमात्रतः ॥

'हे देवी ! कल्पपर्यंत के करोड़ों जन्मों के यज्ञ, व्रत, तप और शास्त्रोक्त क्रियाएँ - ये सब गुरुदेव के संतोषमात्र से सफल हो जाते हैं।' (श्री गुरुगीता)

- भगवान शिवजी

गुरुसेवा है सब पर भारी ! पढ़ें पृष्ठ ३४

गुरुजी की पैर-चम्पी करें तो ही गुरुसेवा है, ऐसा नहीं। बाल संस्कार केन्द्र चलाते हैं, गरीबों में भंडारे करते हैं, ऋषि प्रसाद, ऋषि दर्शन, लोक कल्याण सेतु, सत्साहित्य, सोशल मीडिया द्वारा सत्संग लोगों तक पहुँचाते हैं, युवक-युवतियों को उन्नत करनेवाले अभियान चलाते हैं यह भी तो गुरुसेवा है।

- पूज्य बापूजी

भवसिंधु में डूब रहा था, किनारे पर खींच लाये गुरुदेव १३
महापुरुष के दर्शन का चमत्कार ६
गुरुदेव ने अप्सरा की माया से बचाया ७

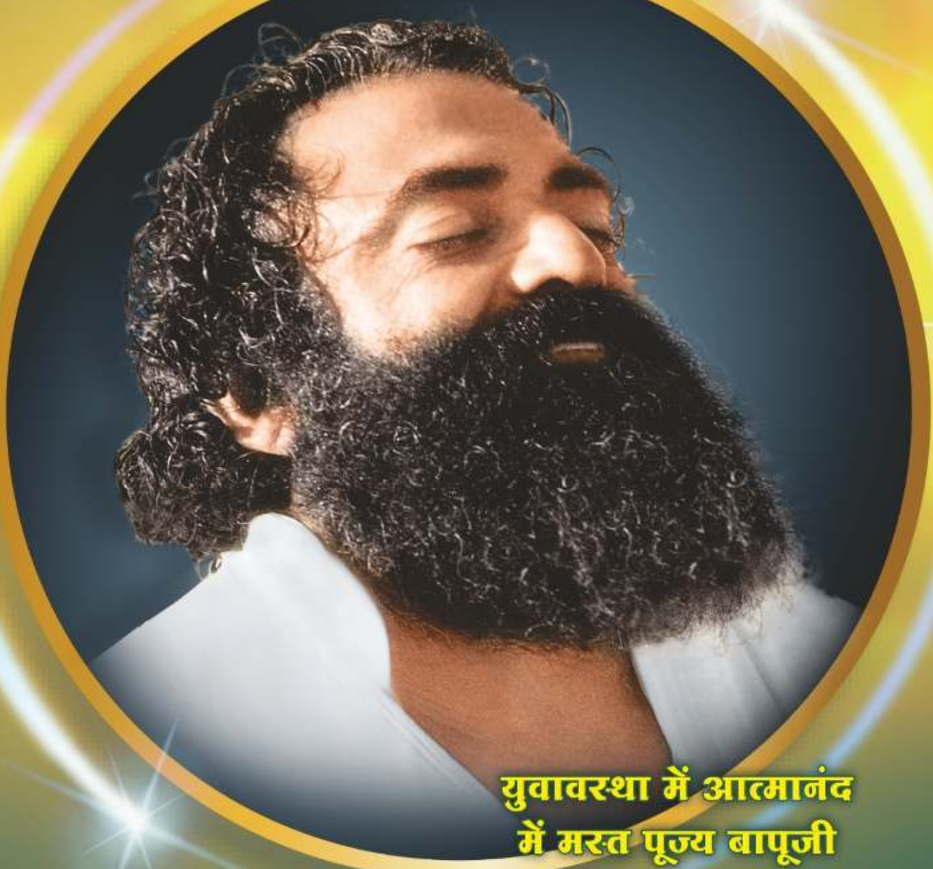

युवावस्था में आत्मानंद
में मस्त पूज्य बापूजी

'यही तेरा सच्चा कर्तव्य है !'

– पूज्य बापूजी

हे परम हितैषी परमात्मा ! हे परम ज्ञानस्वरूप परमात्मा ! हे चैतन्यस्वरूप ! हे आनंदस्वरूप ! तुझमें जो विश्रांति पाता है उसकी सदा दिवाली है, उसको नित्य नूतन रस प्राप्त होता है। नित्य नूतन ज्ञान, नित्य नूतन प्रेम, नित्य नूतन प्रसाद उन्हींको प्राप्त होता है जो तुझ चैतन्य की उपासना करते हैं।

सब अपने-अपने स्वार्थ का कुछ-न-कुछ चश्मा चढ़ाकर आपको किसी-न-किसी कर्तव्य के बंधन में बाँध देंगे लेकिन सद्गुरु सच्चा कर्तव्य बताते हुए कहेंगे कि 'तू शुद्ध-बुद्ध चैतन्य है। तू शाश्वत है, तू नित्य है। सुख-दुःख, बचपन, जवानी, बुढ़ापा अनित्य हैं। तू भगवान का अमर, अविभाज्य स्वरूप है। तू अपना अल्प ज्ञान भगवान के ज्ञान से मिला दे, तू अपना अल्प अहं ईश्वर के 'मैं' से मिला दे। तू अपने ज्ञान को ईश्वर के ज्ञान से मिला के देख, अपने 'मैं' को ईश्वर के 'मैं' से मिला के देख, अपनी शाश्वतता को ईश्वर की शाश्वतता से जोड़कर देख। शरीर पैदा हो के मर जाते हैं परंतु मरने के बाद भी तू रहता है। संसार पैदा हो के मिट जाता है लेकिन परमात्मा रहता है। तू आत्मा है और परमात्मा का अविभाज्य स्वरूप है। जैसे गहना सोने से अलग नहीं, तरंग पानी से अलग नहीं, घड़े का आकाश महाकाश से अलग नहीं ऐसे ही हे मानव ! तू शुद्ध ज्ञानस्वरूप आत्मा-परमात्मा से अलग नहीं है। तू अपने आत्मस्वभाव को जान ले। यही तेरा सच्चा कर्तव्य है।'

आत्मसुखात् परं सुखं न विद्यते। आत्मलाभात् परं लाभं न विद्यते। आत्मज्ञानात् परं ज्ञानं न विद्यते।

आत्मसुख से बड़ा कोई सुख नहीं। आत्मलाभ से बड़ा कोई लाभ नहीं। आत्मज्ञान से बढ़कर कोई ज्ञान नहीं।

उस आत्मदेव की जिनको प्राप्ति हो गयी है ऐसे पुरुषों का सत्संग-सान्निध्य जब मिलता है तब जीवात्मा निष्कंटक मार्ग से परमात्म-प्रसाद की प्राप्ति कर लेता है।

ऋषि प्रसाद

हिन्दी, गुजराती, मराठी, ओड़िया, तेलुगु, कन्नड़, अंग्रेजी व बंगाली भाषाओं में प्रकाशित

वर्ष : ३२ अंक : १ मूल्य : ₹ ७
भाषा : हिन्दी निरंतर अंक : ३५५
प्रकाशन दिनांक : १ जुलाई २०२२
पृष्ठ संख्या : ३६ (आवरण पृष्ठ सहित)
आषाढ़-श्रावण वि.सं. २०७९

स्वामी : संत श्री आशारामजी आश्रम
प्रकाशक : धर्मेश जगराम सिंह चौहान
मुद्रक : राघवेन्द्र सुभाषचन्द्र गादा
प्रकाशन स्थल : संत श्री आशारामजी आश्रम, मोटेरा, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद-३८०००५ (गुजरात)
मुद्रण स्थल : हरि ॐ मैन्युफेक्चरर्स, कुंजा मतरालियों, पौंटा साहिब, सिरमौर (हि.प्र.)-१७३०२५
सम्पादक : श्रीनिवास र. कुलकर्णी
सहसम्पादक : डॉ. प्रे.खो. मकवाणा
संरक्षक : श्री सुरेन्द्रनाथ भार्गव
पूर्व मुख्य न्यायाधीश, सिक्किम; पूर्व न्यायाधीश, राज. उच्च न्यायालय; पूर्व अध्यक्ष, मानवाधिकार आयोग, असम व मणिपुर

कृपया अपना सदस्यता शुल्क या अन्य किसी भी प्रकार की नकद राशि रजिस्टर्ड या साधारण डाक द्वारा न भेजें । इस माध्यम से कोई भी राशि गुम होने पर आश्रम की जिम्मेदारी नहीं रहेगी । **अपनी राशि मनीऑर्डर या डिमांड ड्राफ्ट ('हरि ओम मैन्युफेक्चरर्स' (Hari Om Manufactureres) के नाम अहमदाबाद में देय) द्वारा ही भेजने की कृपा करें ।**

सम्पर्क पता : 'ऋषि प्रसाद', संत श्री आशारामजी आश्रम, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद-३८०००५ (गुज.)
फोन : (०७९) २७५०५०१०-११, ६१२१०८८८
केवल 'ऋषि प्रसाद' पूछताछ हेतु : (०७९) ६१२१०७४२
९५१२०८१०८१ 'RishiPrasad'
ashramindia@ashram.org
www.ashram.org www.rishiprasad.org

सदस्यता शुल्क (डाक खर्च सहित) भारत में

अवधि	शुल्क
वार्षिक	₹ ७५
द्विवार्षिक	₹ १४०
पंचवार्षिक	₹ ३४०
आजीवन (१२ वर्ष)	₹ ७५०

विदेशों में

अवधि	सार्क देश	अन्य देश
वार्षिक	₹ ६००	US$20
द्विवार्षिक	₹ १२००	US$40
पंचवार्षिक	₹ ३०००	US$80

Opinions expressed in this publication are not necessarily of the editorial board. Subject to Ahmedabad Jurisdiction.

इस अंक में...

❖ समर्थ योगी की अभूतपूर्व कृपावृष्टि ४
❖ साधना प्रकाश ✼ साधना में शीघ्र सफलता हेतु १२ नियम ५
❖ महापुरुष के दर्शन का चमत्कार ६
❖ गुरुदेव ने अप्सरा की माया से बचाया ७
❖ धन्य हैं ऐसे सर्वसमर्थ सद्गुरुदेव तथा अद्भुत हैं उनकी लीलाएँ ९
❖ गुरुकृपा बनी महौषधि १०
❖ पर्व मांगल्य ✼ नाग पंचमी पर्व का रहस्य ✼ ऐसे मनायें रक्षाबंधन ११
❖ पूज्य बापूजी के जीवन-प्रसंग १३
✼ भवसिंधु में डूब रहा था, किनारे पर खींच लाये गुरुदेव
❖ चार अक्षर, बना गये साक्षर १७
❖ बापूजी का अद्भुत संकल्प ! १८
❖ योगलीलाओं की शृंखला में जुड़ा एक सुवर्ण अध्याय १९
✼ अब और कैसा चमत्कार चाहिए ? - श्री अशोक सिंहलजी
✼ यह चमत्कारिक घटना से कम नहीं है - श्री सुशीलकुमार शिंदे
✼ पूज्य बापूजी को दैवी शक्ति प्राप्त है - श्री राजनाथ सिंह
❖ शक्तिपात-वर्षा का चमत्कार २१
❖ जीवन के व्यापार में से समय निकालकर सत्संग में आना चाहिए २२
❖ मैंने पूज्य बापूजी के सत्संग को कई स्थानों पर सुना है २२
❖ वैज्ञानिकों के लिए आश्चर्य बनी पूज्य बापूजी की आभा २३
❖ सेवा-अनुष्ठान से मिला महाबल २३
❖ संत वाणी ✼ सद्गुरु सुहृद मिल जायें तो... - संत भोले बाबा २४
❖ ...और रूह फिर से दाखिल हो गयी ! २४
❖ दृष्टि पड़नेमात्र से मिली जीवन को सही दिशा २५
❖ ...और पूरा शरीर शांत व निर्मल हो गया २६
❖ कांधार विमान-अपहरण घटना के दौरान हुआ एक चमत्कार ! २७
❖ थी मौत की तैयारी, जान बची, बना सेवाधारी २८
❖ संस्कृति विज्ञान ✼ पीपल-वृक्ष का महत्त्व क्यों ? २९
❖ संतों की हितभरी अनुभव-वाणी ३०
❖ शरीर स्वास्थ्य ✼ स्वास्थ्यवर्धक व उत्तम पथ्यकर 'जौ' ३१
✼ गौ प्रसारित-संस्कारित दिव्य जौ
✼ गौ प्रसारित-संस्कारित दिव्य जौ के अद्भुत लाभ
✼ उत्तम संतानप्राप्ति का सुंदर शास्त्रीय उपाय
❖ गुरुसेवा महिमा ✼ गुरुसेवा है सब पर भारी ! ३४

विभिन्न चैनलों पर पूज्य बापूजी का सत्संग

अनादि – बात सिर्फ खबर की
रोज सुबह ६:३० व रात्रि ११ बजे टाटा स्काई/प्ले (चैनल नं. ११७०) व म.प्र., छ.ग., उ.खं. के विभिन्न केबल

DIGIANA DIVYA JYOTI
रोज रात्रि १० बजे म.प्र. में 'डिजियाना' केबल (चैनल नं. १०९)

अराधना
रोज सुबह ७:३० व रात्रि ८:३० बजे जम्मू में JK Cable

Mangalmay Digital
Asharamji Bapu
सेवाकार्य – Asharamji Ashram
आश्रम के आधिकारिक यूट्यूब चैनल्स

डाउनलोड करें : **Rishi Prasad App** (ऋषि प्रसाद की ऑनलाइन सदस्यता हेतु), **Rishi Darshan App** (ऋषि दर्शन विडियो मैगजीन की सदस्यता हेतु) एवं **Mangalmay Digital App**

साधना में शीघ्र सफलता हेतु १२ नियम – पूज्य बापूजी

(गतांक का शेष)

(७) सावधानी बरतें कि 'कहीं मनोराज तो नहीं हो रहा है, झोंकों में ही तो समय पूरा नहीं हो रहा है ?' माला जपते-जपते मन कहीं इधर-उधर भाग तो नहीं रहा ? अगर भाग रहा है तो लम्बा श्वास लेकर 'हरि... ओऽऽ... म्...' या 'राऽऽ... म...' अथवा जो भी अनुकूल पड़े उस भगवन्नाम का उच्चारण करो ।

(८) व्यवहार के समय अंदर से ठोस रहें, पिघलें नहीं और साधन-भजन करते समय अंदर से पिघले बिना रहें नहीं । जैसे मोम पिघलता है तो उस समय उसमें जो रंग डालो वह उस रंग का बन जाता है ऐसे ही व्यवहार में अगर आप पिघलते रहोगे तो संसार के रंग से आपका चित्त रँगा रहेगा । व्यवहार में तटस्थ रहो । आपकी पदोन्नति हो गयी तो बहुत खुश होने की जरूरत नहीं है, आपसे बड़े-बड़े पदोन्नतिवाले पदोन्नत होकर मर गये हैं । बहुत घाटा हो गया तो ज्यादा दुःखी होने की जरूरत नहीं है, अपमान हो गया तो ज्यादा परेशान होने की जरूरत नहीं, भीतर से थोड़े मजबूत रहो तो उसका प्रभाव तुम पर नहीं पड़ेगा बल्कि तुम्हारा प्रभाव संसार पर पड़ेगा ।

अगर तुम जरा-जरा बात में प्रभावित होते रहे तो तुमको संसार गुड्डे की नाईं नचाता फिरेगा । इसलिए संसार की सफलता-विफलता में अपने हृदय को प्रभावित होने से बचाओ, पिघलो मत और साधन-भजन करते समय पिघले बिना रहो मत । चित्त जितना पिघला हुआ, द्रवित रहेगा उतना ही साधन-भजन का, भगवद्भाव का रंग चित्त पर चढ़ेगा और चित्त भगवन्मय, साधनमय, ध्यानमय, ज्ञानमय, प्रेममय होने लगेगा ।

(९) मंत्र का उच्चारण स्पष्ट करें और मंत्र के अर्थ में अपने चित्त को लगायें ।

(१०) जप, माला आदि करते-करते अगर ऊब गये हैं तो उसमें थोड़ी विविधता लायें । जपते-जपते ऊब गये, मन नहीं लगता है तो जोर-जोर से जपो । कोई नहीं है तो जोर-जोर से गुरुमंत्र जपो, अगर कोई है तो फिर किसी अन्य मंत्र का जोर-जोर से जप करके थोड़ा कीर्तन करो । तेजी से ५-१० श्वास लो और छोड़ो, इससे मनोवृत्ति बदल जायेगी ।

अगर क्रोध या कामुक विचार आते हैं और उनसे बचना चाहते हैं फिर भी गिर जाते हैं तो हाथ-पैर धोओ, पानी के ३ आचमन लो, पंजों के बल थोड़ा कूदो, श्वास की लय बदलो और हृदय को भगवद्भाव से बदलो तो जहाँ १२-१२ साल काम-क्रोध से युद्ध करते-करते लोग हारते हैं व मरते हैं वहीं उस युद्ध में तुम आसानी से बहुत कम समय में सफल हो सकते हो ।

(११) जप करते-करते ध्यान करें । भगवान या सद्गुरु के श्रीचित्र की ओर एकटक देखें । उनके चरणों से लेकर घुटनों तक, घुटनों से नाभि तक, नाभि से वक्षस्थल तक और धीरे-धीरे अभ्यास बढ़ा के उनके मुखमंडल या नेत्र जहाँ भी तुम्हारा चित्त ठहरता है, वहाँ ५-१० मिनट एकटक देखो । फिर आँखें बंद करके उस रूप को अपने भ्रूमध्य में, जहाँ तिलक करते हैं, वहाँ देखो । इससे छठे केन्द्र का विकास होता है ।

(शेष पृष्ठ ८ पर)

ऐसे मनायें रक्षाबंधन

– पूज्य बापूजी

भारतीय संस्कृति में रक्षाबंधन आत्मीयता और स्नेह के धागे से पवित्र भावों को मजबूती प्रदान करने का पर्व है । रक्षाबंधन के दिन भैया की रक्षा का संकल्प साकार करने के लिए बहन भाई के घर आती है । राखी का धागा तो छोटा-सा होता है परंतु बहन का संकल्प उसमें अद्भुत शक्ति भर देता है । संकल्प जितने निःस्वार्थ, निर्दोष और पवित्र होते हैं उतना ही उनका प्रभाव बढ़ जाता है ।

रक्षाबंधन : ११ अगस्त

बहन भैया को राखी बाँधती है कि वर्षभर आनेवाली विघ्न-बाधाओं पर मेरा भैया विजेता होता जाय । बहन भैया के ललाट पर तिलक करती है, संकल्प करती है : 'मेरा भैया त्रिलोचन बने और भोग की दलदल में न गिरे । भोग से रोग, भय होता है । मेरा भैया भोगी नहीं, योगी बने । मेरे भाई की दृष्टि मंगलमय हो, उसका मंगल हो ।' शुभ संकल्प बड़ा काम करते हैं । विघ्न-बाधाओं के सिर पर पैर रखने का सामर्थ्य बहन के संकल्प में और भाई के पुरुषार्थ में विधाता ने जोड़ रखा है ।

भैया भी इस दिन बहन को ऐहिक चीज देकर संतुष्ट तो करता है, साथ में बहन के जीवन की जिम्मेदारी अथवा बहन के जीवन में आनेवाली कठिनाइयों को दूर करने की जिम्मेदारी भी अपने चित्त में ठान लेता है ।

अपनी दृष्टि को विशाल बनाओ

बहनों और भाइयों से मैं चाहता हूँ कि 'तुम अपने घर तक सीमित न रहो । बहन ! तू भारत की नारी है । और भैया ! तू भारत का नर है । 'भा' माने 'ज्ञान' और 'रत' माने रमण करनेवाला अर्थात् ज्ञान में जो रमण करे वह भारत । ऐसे देश के तुम वासी हो, अपनी दृष्टि को विशाल बनाओ ।'

परमात्मा ने नारी में विशालता, सहनशक्ति तो दी परंतु नारी संकीर्ण बनती है तो झगड़े का मूल कही जाती है । नारी को यह कलंक लग जाता है । नारियाँ अगर भारतीय संस्कृति की महानता अपने हृदय में ले आयें, अपने हृदय में ठान लें तो पशुतुल्य आचरण वाले पति को भी पशुपति★ बनाने में सफल हो सकती हैं ।

भाइयों को भी संकीर्ण नहीं होना चाहिए । केवल अपनी एक-दो बहन ही बहन नहीं, पड़ोस की बहन भी अपनी ही बहन है ऐसा समझना चाहिए । भाई द्वारा पड़ोस की बहन की भी रक्षा हो और बहन द्वारा पड़ोस के भाई का भी शुभ हो ऐसा सद्भाव किया जाय । यह परस्पर हित का भाव समाज में फैले ।

रक्षाबंधन का पर्व नूतन जनेऊ पहनने का, शुभ संकल्प करने का दिन तो है परंतु मैं यह चाहता हूँ कि आज के दिन को आप जीवन का परम शुभ लक्ष्य निश्चित करने का भी दिन मानें । ऐसा मानना अतिशयोक्ति नहीं होगी । गुरुपूनम के बाद की पूनम है राखी पूनम – रक्षाबंधन । साधक अपने गुरु का दैवी कार्य और भी व्यापक हो आदि-आदि प्रकार के शुभ संकल्प गुरु के लिए करते हैं और गुरुदेव साधक की साधना में उन्नति के लिए शुभ संकल्प करते हैं । तो एक-दूसरे को आध्यात्मिक जगत में मददरूप

★ मन की पाशवी वृत्तियों पर नियंत्रण रखनेवाला

जीवन के व्यापार में से समय निकालकर सत्संग में आना चाहिए

''मैं पूज्य बापूजी का अभिनंदन करने आया हूँ... उनके आशीर्वचन सुनने आया हूँ । संत-महात्माओं के दर्शन तभी होते हैं, उनका सान्निध्य तभी मिलता है जब कोई पुण्य जागृत होता है ।

देशभर की परिक्रमा करते हुए जन-जन के मन में अच्छे संस्कार जगाना, यह एक ऐसा परम राष्ट्रीय कर्तव्य है जिसने हमारे देश को आज तक जीवित रखा है और इसके बल पर हम उज्ज्वल भविष्य का सपना देख रहे हैं... इस सपने को साकार करने की शक्ति और भक्ति एकत्र कर रहे हैं ।

पूज्य बापूजी सारे देश में भ्रमण करके जागरण का शंखनाद कर रहे हैं, संस्कार दे रहे हैं । हमारी जो प्राचीन धरोहर थी और जिसे हम लगभग भूलने का पाप कर बैठे थे, बापूजी हमारी आँखों में ज्ञान का अंजन लगा के उसको फिर से हमारे सामने रख रहे हैं । बापूजी का प्रवचन सुनकर बड़ा बल मिला, बड़ा आनंद आया । जीवन के व्यापार में से थोड़ा समय निकालकर सत्संग में आना चाहिए ।''

- भारतरत्न श्री अटल बिहारी वाजपेयी, पूर्व प्रधानमंत्री

मैंने पूज्य बापूजी के सत्संग को कई स्थानों पर सुना है

''मैं पूज्य बापूजी के श्रीचरणों में प्रणाम करने आया हूँ । भक्ति से बड़ी दुनिया में कोई ताकत नहीं होती और भक्त हर कोई बन सकता है । हम सबको भक्त बनने की ताकत मिले, आशीर्वाद मिलें । संतों के आशीर्वाद ही हम सबकी बड़ी पूँजी होती है । मैंने तो पूज्य बापूजी को हरियाणा में बैठकर सुना है, पंजाब में भी सुना है, राजस्थान में व उत्तर प्रदेश के गलियारों में सुना है । समग्र राष्ट्र में सामूहिक सत्संग के द्वारा एक नयी चेतना जगी है और उसका एक नया प्रभाव शुरू हुआ है ।

मेरा ऐसा सौभाग्य रहा है कि जीवन में जब कोई नहीं जानता था, उस समय से बापूजी के आशीर्वाद मुझे मिलते रहे हैं, स्नेह मिलता रहा है । बापू के शब्दों में एक यौगिक शक्ति रहती है ।

पूज्य बापूजी ! आप देश और दुनिया - सर्वत्र ऋषि-परम्परा की संस्कार-धरोहर को पहुँचाने के लिए अथक तपश्चर्या कर रहे हैं । अनेक युगों से चलते आये मानव-कल्याण के इस तपश्चर्या-यज्ञ में आप अपने पल-पल की आहुति देते रहे हैं । उसमें से जो संस्कार की दिव्य ज्योति प्रकट हुई है, उसके प्रकाश में मैं और जनता - सब चलते रहें । मैं संतों के आशीर्वाद से ही जी रहा हूँ । मैं यहाँ इसलिए आया हूँ कि लाइसेंस रिन्यू हो जाय । पूज्य बापूजी ने आशीर्वाद दिया और आप सबको वंदन करने का मौका दिया इसलिए मैं बापूजी का ऋणी हूँ ।''

- श्री नरेन्द्र मोदी
तत्कालीन मुख्यमंत्री, गुजरात
वर्तमान प्रधानमंत्री, भारत सरकार

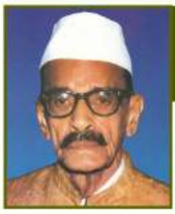

आज मैं धन्य हुआ...

''पूज्य स्वामीजी के दिव्य दर्शन एवं अनुभव-सम्पन्न वाणी का मुझ पर काफी गहरा प्रभाव पड़ा है । ऐसे संतों की निगाह से तन प्रभावित होता है और उनके वचनों से मन भी पवित्रता का रास्ता पकड़ लेता है । मैं आज धन्य हुआ कि मुझे महाराजश्री के प्रत्यक्ष दर्शन हुए ।''

- श्री गुलजारीलाल नंदा, पूर्व प्रधानमंत्री

पीपल-वृक्ष का महत्त्व क्यों ?

(गतांक का शेष)

पीपल से स्वास्थ्य-लाभ

पूज्य बापूजी के सत्संग में आता है : ''हमारे शास्त्रों व महापुरुषों ने पीपल की महत्ता खूब बतायी है । अनेक वैज्ञानिक भी बताते हैं कि पीपल के वृक्ष के फायदे अद्भुत हैं ।

पीपल का पेड़ हृदय को मजबूत करनेवाला और कई औषधियाँ देनेवाला है । दमा, जो लाखों रुपये खर्च करने पर भी अंग्रेजी दवाओं से नहीं मिटता है वह पीपल के पत्तों और पीपल के फलों का उपयोग करने से मिट जाता है । स्वभाव में जो दब्बू हैं ऐसे लोग भी अगर पीपल को स्पर्श करते हैं तो उन्हें भी कुछ बल मिलता है। जो लोग पीपल को फेरा फिरते हैं, पीपल को स्पर्श करते हैं उनका हृदय मजबूत हो जाता है ।

कितनी भी गर्मी और गर्मी-संबंधी बीमारियाँ हों - पीपल की टहनियाँ, पत्ते, फल-फूल... सब छाया में सुखा के कूट दिये, उनका चूर्ण बना दिया अथवा पीपल के पत्ते, टहनियाँ, फल आदि जो सूख जाते हैं, गिर जाते हैं उनका चूर्ण बनाकर रख लिया । १-२ चम्मच चूर्ण १ गिलास पानी में उबाला फिर उसका शरबत बना के या दूध में डाल के पिया । इससे आपके शरीर की पित्त व गर्मी संबंधी बीमारियों में आराम हो जायेगा, महिलाओं के मासिक धर्म की जो गर्मी-वर्मी है उसमें आराम हो जायेगा । इससे बहुत फायदे होते हैं । अगर मधुमेह (diabetes) है तो शरबत नहीं बनाया, सब्जी में ही १-२ चम्मच चूर्ण डाल दिया ।

पीपल के पत्ते गुर्दों (kidneys) की सफाई करते हैं । पेशाब खुल के नहीं आता हो, पित्त के कारण आँखों में जलन होती हो तो यह चूर्ण ले लेना ।

यह सावधानी है बहुत जरूरी

हरे पीपल की ज्यादा तोड़फोड़ करना अपराध माना जाता है । पत्ते गिरे हुए मिलें तो ठीक है, नहीं तो पीपल देवता को प्रणाम करना, प्रार्थना करना कि 'महाराज ! औषधि के रूप में आपकी सेवा हम लेते हैं, कृपा करना ।' माफी माँग के थोड़े पत्ते-पत्ते तोड़ें फिर पीपल को दूध और पानी चढ़ा दें ।

जैसी दृष्टि वैसा लाभ

एक वैज्ञानिक को पीपल का पेड़ दिखा, वह बोलेगा : 'इसकी लकड़ियों में ऐसा है - ऐसा है, यह गुण है, यह दोष है । इसके फर्नीचर से ऐसे-ऐसे फायदे होंगे या यह होगा । इसके धुएँ से यह हो रहा है, यह होगा ।' वैज्ञानिक ने पीपल को लकड़ी समझकर उसका उपयोग किया । वैज्ञानिक आधिभौतिक दृष्टि से देखता है तो उसका उपयोग आधिभौतिक ही होता है ।

स्वास्थ्यवर्धक व उत्तम पथ्यकर 'जौ'

आयुर्वेद ने 'जौ' की गणना नित्य सेवनीय द्रव्यों में की है । यह मधुर, पचने में हलका, शीतल, कफ-पित्तशामक, भूखवर्धक, स्वर को उत्तम करनेवाला, रक्तशुद्धिकर, वर्ण-निखारक, बुद्धिवर्धक, शरीर में स्थिरता उत्पन्न करनेवाला तथा बल-वीर्यवर्धक अनाज है ।

जौ-सेवन के लाभ :

✲ जौ हृदय की रक्तवाहिनियों को लचीला बनाये रखता है, उच्च रक्तचाप (hypertension) को नियंत्रित करने में मदद करता है, जिससे हृदयरोग से रक्षा होती है ।

✲ गुर्दों की खराबी (kidney failure), प्रोस्टेट की वृद्धि, पथरी, मूत्र-संक्रमण (UTI), पेशाब में रुकावट तथा जलन आदि समस्याओं में इसका सेवन खूब लाभकारी है ।

✲ कैंसर की रोकथाम तथा उससे सुरक्षा के लिए छिलकेसहित जौ का सेवन अत्यंत लाभदायी सिद्ध हुआ है ।

✲ मोटापा कम करने हेतु जौ सर्वोपरि पथ्यकर अनाज है । सब्जियाँ मिलाकर बनाया गया छिलकेसहित जौ का दलिया वजन कम करने के लिए श्रेष्ठ विकल्प है ।

✲ इसमें प्रचुर मात्रा में रेशे होने से पाचन-संस्थान स्वच्छ व सशक्त होता है । मल-मूत्रप्रवृत्ति खुलकर होती है । पुराने कब्ज में यह उत्तम आहार है । चर्मरोग, पेट के छाले (peptic ulcer), कफ व पित्तजन्य विकारों में भी इसका सेवन लाभदायी है ।

गौ प्रसारित-संस्कारित दिव्य जौ

भारतीय संस्कृति के शास्त्रों में एक विलक्षण प्रयोग बताया गया है जिसके अंतर्गत गायों को अनाज खिला के गोमय (गोबर) में से उसे पुनः प्राप्त कर उसका सेवन किया जाता है । जब जौ गौमाताओं के शरीर से पसार होता है तब उसमें गायों की सूर्यकेतु नाड़ी द्वारा ग्रहण की हुई शक्तिशाली 'गौ किरणों' एवं गायों की जठराग्नि के संस्कार आ जाते हैं । इससे उसके गुणों में और भी अभिवृद्धि होती है, साथ ही ऐसा जौ अधिक सुपाच्य हो जाता है जो रुग्ण व्यक्तियों के लिए विशेष उपयोगी है । जर्सी, होलस्टीन आदि विदेशी तथाकथित गायों में सूर्यकेतु नाड़ी नहीं होती ।

महाभारत (अनुशासन पर्व : ८१.३९-४०) में आता है :

निर्हृतैश्च यवैर्गोभिर्मासं प्रश्रितयावकः ।...

...ते देवत्वमपि प्राप्ताः संसिद्धाश्च महाबलाः ॥

'गौओं के गोबर से निकाले हुए जौ की लप्सी (पतला हलवा) का एक मास तक सेवन करे । इससे मनुष्य ब्रह्महत्या जैसे पाप से छुटकारा पा जाता है । जब दैत्यों ने देवताओं को पराजित कर दिया तब देवताओं ने इसी प्रायश्चित का अनुष्ठान किया । इससे उन्हें पुनः (नष्ट हुए) देवत्व की प्राप्ति हुई तथा वे महाबलवान और परम सिद्ध हो गये ।'

हर प्रकार के सुलगते सवालों व ढेरों समस्याओं का हल

आश्रम का इष्टग्रंथ श्री योगवासिष्ठ महारामायण (भाग १ से ४)

सहज में दुःख दूर करके परमात्मा के दिव्य आनंद से जीवन को सराबोर करनेवाला अद्भुत सद्ग्रंथ । इससे जानिये - क्या है सृष्टि का मूल और कैसे हुई जगत की उत्पत्ति ? आत्मसाक्षात्कार करने का सबसे सरल उपाय ।

चारों भागों का मूल्य : ₹ ७२५ (डाक खर्च बिल्कुल मुफ्त !)

कपूर

✲ पूजा, आरती आदि धार्मिक कार्यों में यह उपयोगी है ।
✲ वातावरण को शुद्ध करनेवाला है ।
✲ संक्रामक रोगों से सुरक्षा हेतु कपूर की पोटली बनाकर उसे सूँघना लाभदायी है ।

हरड़ रसायन गोली

हरड़ रसायन गोली चूसकर खायें, पाचन-समस्या को दूर भगायें...

यह अपचित भोजन को पचानेवाला व शरीर में स्थित कच्चे रस को पकाकर शरीर को शुद्ध करनेवाला उत्तम रसायन योग है । ये गोलियाँ त्रिदोषशामक हैं । इन्हें चूसकर खाने से भूख खुलती है । ये छाती व पेट में संचित कफ को नष्ट करती हैं ।

सदाबहार तेल

यह बालों का झड़ना, असमय सफेद होना, गंजापन, रूसी आदि समस्याओं में लाभकारी है । यह बालों को काला, चमकदार तथा घना बनाने में सहायक है । टालवालों को भी बाल आ जायें यह इसकी खास विशेषता है ।

केश पोषक (Hair Care)

धोये हुए सूखे बालों में प्रतिदिन इसे लगाने से रूसी निकलकर बाल झड़ना बंद होते हैं और बाल लम्बे व घने होते हैं ।

शुद्ध स्वर्णभस्म युक्त सुवर्णप्राश टेबलेट

ये गोलियाँ बालकों के बौद्धिक, मानसिक तथा शारीरिक विकास के लिए अत्यंत उपयोगी हैं । ये आयु, शक्ति, मेधा, बुद्धि, कांति व जठराग्नि वर्धक तथा उत्तम गर्भपोषक हैं । गर्भवती महिला इनका सेवन करके निरोगी, तेजस्वी, मेधावी संतान को जन्म दे सकती है । विद्यार्थी भी धारणाशक्ति, स्मरणशक्ति तथा शारीरिक शक्ति बढ़ाने के लिए इनका उपयोग कर सकते हैं ।

उपरोक्त सामग्री संत श्री आशारामजी आश्रमों में सत्साहित्य सेवा केन्द्रों से तथा समितियों से प्राप्त हो सकती है । अन्य उत्पादों व उनके लाभ आदि की विस्तृत जानकारी के लिए एवं घर बैठे रजिस्टर्ड पोस्ट द्वारा सामग्री-प्राप्ति हेतु गूगल प्ले स्टोर से डाउनलोड करें : "Ashram eStore" App या विजिट करें : www.ashramestore.com या सम्पर्क करें : (०७९) ६१२१०७६९. ई-मेल : contact@ashramestore.com

RNI No. 48873/91
RNP. No. GAMC 1132/2021-23
(Issued by SSPOs Ahd, valid upto 31-12-2023)
Licence to Post without Pre-payment.
WPP No. 08/21-23
(Issued by CPMG UK. valid upto 31-12-2023)
Posting at Dehradun G.P.O. between
1st to 17th of every month.
Date of Publication: 1st July 2022

महिला उत्थान मंडल द्वारा पर्यावरण सुरक्षा अभियान

विद्यार्थियों के उज्ज्वल चरित्र व देश के उन्नत भविष्य के लिए हुए विद्यार्थी शिविर

शीतल शरबत व छाछ वितरण द्वारा भीषण गर्मी से राहत दिलाते बापूजी के प्यारे

ऋषियों का अमृतमय ज्ञान जन-जन तक पहुँचाने में लगे सच्चे पुरुषार्थी वीर

स्थानाभाव के कारण सभी तस्वीरें नहीं दे पा रहे हैं। अन्य अनेक तस्वीरों हेतु वेबसाइट www.ashram.org/sewa देखें।

स्वामी : संत श्री आशारामजी आश्रम **प्रकाशक** : धर्मेश जगराम सिंह चौहान **मुद्रक** : राघवेन्द्र सुभाषचन्द्र गादा **प्रकाशन-स्थल** : संत श्री आशारामजी आश्रम, मोटेरा, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद-३८०००५ (गुजरात) **मुद्रण-स्थल** : हरि ॐ मैन्युफेक्चरर्स, कुंजा मतरालियों, पौंटा साहिब, सिरमौर (हि.प्र.)-१७३०२५ **सम्पादक** : श्रीनिवास र. कुलकर्णी